

# ईश्वर स्वरूप महाराज्जि अथ

लेखन ग्रामच

स्वामी परमानन्द जीयिन्य  
अमरनाथ यात्रा - लीला

संपादिका : प्रभा देवी

वारिका प्रकाशन, दिल्ली



## ग्वड़ कथ

अज सदगुर महाराज सुन्दिस ज़ा दोहस प्यठ छि अस्य सारी  
श्रीमती प्रभा जीयि वछि वालिन्जि हयोत त रुत कांछान यिमव  
अरव मोलुल रत्न खटनु बजायि ब्रोन्ह कुन वातुनोव त लोल  
बोछि हत्यन हन्जि बोछि ओनुख करार । ।

माजि कशीरि हुंध्य अज़ीम सूफी सन्त त गुणमात श्री  
परमानन्दन अमरनाथ यात्रायि प्यठ अनुभव पोशि लन्जव सूत्य  
शीरमुच त पूरमच भाव लीला कस सनाह भक्तस छनु व्यज़ ।  
पननि अनुभवचि कहवचि प्य० अमि लीलायि हुन्जिन स्वन  
लाच्यन गाहबेगाह खारिथ सान्य सदगुर महाराज अस्य पनुनि  
दोजि प्यठ नवि आयि मोहर दिथ अमिच भावथ करान । अथ्य  
सूत्य रुंगिथ गुयि अकि दोह सदगुरु त फिरख यि लीला कागज़स  
प्यठ । द्रह श्रुक्य लीखिथ हयोतहस बययि साम । थरक् दिथ  
कोरुख शारिका जी फरमान । पम्पोशि अथव सूत्य कर अन्दताम  
यि लीला शारिकी दीवीयि पूर । लीला लेखनुक बहानु बन्यव  
सबबगार । शारिका जीयि करुनाव सदगुरन अथ्यमन्ज स्व रूप  
साक्षातकार । ।



यिथु पाठय रूज यि लीला अरव अहम यादगार । अवमोरव  
खोत अथ चाव ज्यादय हना यलि सदगोरन ध्युत हुकुम प्रभाजीयि  
त वोनुरव, “प्रभय यि छि रछय, त अथ कर रुछय” ।

प्रभाजीयि ति थुव यि पुत्यम्यव पंचाहव वुरियव प्यटु शीरिथ  
त पूरिथ त विजि विजि दितुरव अनुभव सुदरक्यव छिकव सूत्य  
पनुनिस सुदरस वुसुजार ।।

यिथु पाठय पनुनि अथु लीछमुच यि रुछय त तथ्य सूत्य  
शारिका दीवीयि हुंदि अथु लीखमुत्य बाकय शुक्क्य अभी चालि  
भक्त्यन निश रोजनु मोरव कोर प्रभाजीयि बोड वोपुकार असि  
प्यट । यी नजरि तल थाविथ वातुनाव यि लीला असि ताम ।

असि छि आश जि प्रभा जी करन ब्रोट कुन ति गाशि  
आगरक्यव जूचव सूत्य अज्ञानु गटि मंज हयनु आमत्यन असि  
रुछय रावट ।।

सदग्वरु वारि हुन्द कुकिला  
प्रो. मक्खन लाल

सदगुरु महाराज सुन्ध ।

जन्मदोह

१८ अप्रैल

रविवार, १९९३

ॐ

देहग्वफ सच्चिदानन्दलिङ्ग.  
मन्पीठस् प्यर् बिहित निःसङ्ग.  
लोक द्रष्टनस् कैलासशृङ्ग. मं० ॥ १ ॥

कन धाव सरस्वती क्य वनन्  
वन्न वन्न पान् कुय ना सनन्  
नाम् रूप व्यन् भ्योन् भ्योन् ननन् मं० ॥ २ ॥

त्राहि मां पर यात्रा त्र कर  
हरमोख पन्ननुय पान त्र वर  
ग्वफ म्येन् ग्वफ क्य वयवर मं० ॥ ३ ॥

ग्वढ गणपत्यारुक् गणेश  
दूर मो ज्ञान् रुजित् कु निश  
मूलाधार द्वारुक महीश मं० ॥ ४ ॥

ब्रह्मा सु युस हृष्टिकर्तार  
 स्वाधिष्ठान पुराहयार  
 षट्दल षट्मोख ज्ञान कुमार मं० " ५  
 शिवप्रार फेर कुण्डलिनी  
 फेरवत्र प्राण तत्त्र जल कण्ये  
 सत् समन्दर सत्र वोगण्ये मं० " ६ "

अष्टदल सु द्राव पम्पोषाढल्  
 यूय फेर तोर कुन् मो ज्ञ ढल्  
 व्येचार अच्छय संसार ढल् मं० " ७ "

ह्युर ह्युर खस्त न्यूर न्यूर च वात्  
 दूर प्योमुत् कुक कप्र वृणात्  
 गत् प्रावणच्य भोज्ञ कथ त् बात् मं० " ८ "

तीर्थहस्त मां कुञ्च काँह पोदाह  
 वीदन त्र ऊँकार विन पदाह  
 जीवन्मुक्त परमात्मा " मं० " ९ "



लीला वि क्य अमरनाथ चीय  
 देहद्वार सान एकान्त चीय  
 शम् दम ग्वफ के प्रशान्त चीय मं० ॥ १०

नाभिदीप्त दशदल संगमस  
 यम्य चावै लुक सत्संगमस  
 कृष्णसंस्थावरजंगमस मं० ॥ ११

मन्दिर मुचत् उच्छत् चन्द्रयार  
 सपनीय तति हरिचन्द्रयार  
 विजयी प्रवरी जन्म जन्म पाश मं० ॥ १२

कृज् त्रिवित् वात् ध्रुजवोर  
 लज्जाम्बु क प्रिवजटा चपोर  
 अनाहतमण्डलस्थावज्ञ खोर ॥ मं० ॥ १३

कृयप् प्रोण्ड् सत्वात् प्रोण्डबल  
 विशुद्धचक्रन् जीवयत्  
 दीव पूज कर जीवभाव ढल ॥ मं० ॥ १४

मंजुवात् ख्यलनस् त ख्येलनस्  
 पानस् च पानस् मैलनस्  
 तीलजन तेलस् तैलनस् ॥ म०॥१५॥

वातख्य च वति वति वीरसिरन्  
 तति धिय न वातान्वीर सिरन्  
 वर्जवात् सूति बलवीरयिरन् ॥ म०॥१६॥

मन निष् दूरकरलय विक्षेप  
 नावित् गणीशस सारलीय  
 जलनय तीय गोस् रतनदीप ॥ म०॥१७॥

पुशराव पान परमेश्वरस्  
 वतित् रोज मामलीश्वरस्  
 प्रदिक्षिण केरत् तत् मन्दिरस् ॥ म०॥१८॥  
 भ्रगतीर्थ य्यठ कुय स्वर्गदार  
 वर्ग निष् मशरित मो क्क त्रार  
 भाव अर्ध यौष् पूजा च सार ॥ म०॥१९॥



रेङ्गलू त्रावित् रीङ्ग पल  
 पावित निपूानसमो च ढल  
 धर्मस् ते कर्मस् सार् फल ॥ म० ॥ २० ॥  
 कण्ठदीप्ता युस् छु चोदाह भुवन्  
 नीलगंगि य्यठ् भोज् कवजन्  
 तीति तोर पवनीय श्रोत दवन् ॥ म० ॥ २१ ॥  
 मङ्गिल कु सङ्ग मङ्ग वारयाह  
 छोट वनुन् मोट भोज् वारयाह  
 अक्रिया दारचिय यी क्रिया ॥ म० ॥ २२ ॥  
 लाङ्गिम् छु यी यी ती वोनुय  
 ननवोर वाताव कौर कुनुय  
 यकि युस् दपि पँक हावनय ॥ म० ॥ २३ ॥

ईष्टं देष्टुं उत्तमं शेषनागं  
 ह्यकस्वयं च तत्तिदिनरातजगं  
 रागं तत्रैव प्राप्य महां वैरागं ॥ म० ॥ २४ ॥

त्यागपञ्च करित् प्रञ्चीतरंगं  
 सत्समृद्धरूकीयचित्तरंगं  
 पद्मनाभसु प्रिययिम्तिरंगं ॥ म० ॥ २५ ॥

अस्तु अस्तु स्वस्तु पञ्चालसीय  
 सोऽहं भैरव बालसीय  
 दुक् युष्मन् न लगि अति लालसूय ॥ म० ॥  
 २६

जिह्वं रोजं भोजं जिह्वं मरुन्  
 गर्भयात्रायु अपोर तरुन्  
 सतिये कुय ततिय शिव वरुन् ॥ म० ॥ २७ ॥

शो ज़रित् संकल्पनिधि मन  
 दैष्ट काल रोस्त काल दैष्ट मन  
 शि हेली त् ईष्ट अनीष्ट मन ॥ म० ॥ २८ ॥

छिय परा पश्यन्ती पश्यन्  
 मध्यमा वैखरी मा पश्येन्  
 इच्छा अवस्था कथ तपश्चक्ष्यन् ॥ म० ॥ २९ ॥

भाव प्रमरावतीयि ज्ञ नाव  
 मल भभूत कल गृहस्थभाव  
 शिवपादन् पाम पुषिराव ॥ म० ॥ ३० ॥

रुद् मुत् ग्वकि युस शोद्ध भोद्य  
 नौ त्यद् धीन् तति अष्टसिद्ध  
 प्राकाशवत् किं ह न गट वद्य ॥ म० ॥ ३१ ॥



यस् क प्रतिमा वटकनाथ  
 युस् कु भैरव वेताल सात्  
 ह्यस् गिरि स्वयंवर वपूनात् ॥ म० ॥ ३२ ॥  
 नंगमोत तू हंग त मंग रौज  
 ईश्वर दर्शन शब्दभोज  
 ईय कर ३ ध्यान दयंगूर सोज ॥ म० ॥ ३३ ॥

ग्वफि मञ्ज ग्वफि वात् पनजे  
 त्राव दीवी तू दिवता श्रये  
 कृत्य कय न सिमू भवूत् कन्ये ॥ म० ॥ ३४ ॥

कन्य मञ्ज लाल सुय मन्य मञ्ज  
 कोन् कोन् कोन्य रुक रोन्त्य मञ्ज  
 तप कर तू देह श्राकृत्य मञ्ज ॥ म० ॥ ३५ ॥

सोऽहं शब्द प्रेम प्रणव  
 प्राज्ञा शैखरस त्राव रव  
 तालव कभूतर आलव ॥ म० ॥ ३६ ॥  
 सहस्रदललयगात् च प्राव  
 ब्रह्मरन्ध्रस कु निष्कलस्वभाव  
 दमचीय दमालि करतू काव ॥ म० ॥ ३७ ॥  
 पकवुन क दारस मथ मथान्  
 यान गौ च यति भयं हान वधान्  
 समाधि मञ्ज तूथ ह्यु व्युत्थान् ॥ म० ॥ ३८ ॥  
 पननुय कु पान् पानस च्चमुन्  
 तूत् च्चमुन् तूत् समुन् तूत् शमुन्  
 प्रत् वोहुन लोलू नार प्रूत् हमुन् ॥ ३९ ॥

युत्थ धान कुय न प्रोवमुत यमन्  
तिम वृय जौनभ्रन्त्य प्राव इमन्  
परमात्मा पानसभेनुन् ॥ म० ॥ ४० ॥

तति फोरूनुन् प्रनाहत् नाद्  
स्वप्न प्रन्त सुषुम्णायि प्राद्य  
तुर्या त् तुर्याती त समाद्य ॥ म० ॥ ४१ ॥

जिस्में जोगी प्रौर पढा  
जाग्रत स्वप्न पिंगला इडा  
उतरा वहाँ कोई ना चडा ॥ म० ॥ ४२ ॥

भौरा कमल में जब वडा  
प्रपना सिबानी सब गढा  
प्रौर था कोई नाही वडा ॥ म० ॥ ४३ ॥



कीरित् इडायि कित्य संगमस  
 रसपूर्ण मय रवेत्मुत वस  
 तति प्रादू करान् छिय यसभ तस॥म०  
 ४४॥

गवफ च्चल् च्च त्रवित् तस शिवस्  
 तस रोस रोजिय न कांह च्यतस  
 पान् पुषिरावुन छुय च्य तस॥म०॥४५॥

शैव शैव दयान् निशि मो च्च ढल्  
 च्चु च्चम च्चिय प्रकृत पुरुषसम् ढल्  
 कोर् यि चित्रकार मायायि छल्॥म०॥४६॥

यव किञ् शिव ज्ञानक् ज्ञोपोर  
 रोजनय न कुन्य पापञ्च्य भूस्  
 भवसर सार शैव शैव तोर॥म०॥४७॥

पुन गच्छुन् कुय च्यन्मात्रा  
 ज्ञानियस् कुय वुक्किञ् यात्रा  
 पनन्यीय वनन्यीय कुय वारता ॥ म० ॥ ४८ ॥

वस नौ द्वार वात नौ दल  
 वतित् जलिय जन्मूच वदल  
 देहयात्रा गयि यी सुफल ॥ म० ॥ ४९ ॥

देह कुय वौन्मुत् देव द्वार  
 संसार जंगलुक् देवद्वार  
 ध्यान कर ध्यान ज्ञान देह उद्धार ॥ म० ॥ ५० ॥

फेरुन कुय न प्रदू त्रिभवनस्  
 वातित् यथ विष्णुभवनस्  
 यमलस् तू कमलस् भवनस् ॥ म० ॥ ५१ ॥

बुज्जनस् कु जलनिर्मल उज्ज्वल  
 नित्य न्यैम् युस् भावनिबाल तल  
 बुदिमन् वातु भावनिबाल तल ॥ म० ॥ ५२ ॥  
 भर्गपादपूज संसर्गन्यैर  
 चमकीय तीज कासीय मन्यर  
 जलनयन्य जन्मजन्मक भखैर ॥ म० ॥ ५३ ॥  
 भर्ग दीफ नौ देर्गाहि च मान  
 स्वर्गलोककीय कीय तस् नमान  
 यष्टदीवी कृ पनत्पीय प्रमान ॥ म० ॥ ५४ ॥  
 देवी स्व पार्वती सती  
 मूर्त्ति यस् वज्रिक् मीनावती  
 शैव तस् वरनस् प्राव ततीय ॥ म० ॥ ५५ ॥



शैव शक्तप्रकं नाम रूप भ्युन्  
 पान् भोजं पान् क्या भ्युन् वनुन्  
 परमानन्द पान् स भनुन् ॥ म० ॥ ५६ ॥

हे दीवीम्य दया करुम्  
 कर्म फल बुद्धि नय म्य वरुम्  
 हर हर हर पाप शाप हरुम् ॥ ५७ ॥  
 मन स्थिर कर पूजोन् प्रभू ॥ ५७ ॥

मन्त्र पर शिव शम्भू  
 मन स्थिर कर पूजोन् प्रभू ।  
 मन्त्र पर शिव शम्भू  
 मन स्थिर कर पूजोन् प्रभू ॥

---



---

मुद्रक : अमृत प्रिन्टिंग वर्क्स, 126, माल रोड, दिल्ली-9 फोन : 7217051

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGangotri